अध्याय 7: वर्षा-बहार

विषय-सूची

6 प्रश्नावली · 13 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1	मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)	4 प्रश्न
प्रश्नावली 7.2	मिलकर करें मिलान (भावार्थ मिलान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.3	सोच-विचार के लिए	5 प्रश्न
प्रश्नावली 7.4	कविता का सौंदर्य (पर्यायवाची शब्द-चयन)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.5	विशेषण (विशेषण-विशेष्य पहचान)	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.6	ऋतु और शब्द (शब्द-वर्गीकरण)	1 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1 — मेरी समझ से (बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1

इस कविता में वर्षा ऋतु का कौन-सा भाव मुख्य रूप से उभर कर आता है? (क) दुख और निराशा (ख) आनंद और प्रसन्नता (ग) भय और चिंता (घ) क्रोध और विरोध

हल

कविता में मालिनें गीत गाती हैं, मोर नृत्य करते हैं, मेंढक सुगीत गाते हैं, पपीहे ग्रीष्म-ताप खोते हैं, बागों में आमोद छाता है।
हर दृश्य उत्सव और हर्ष का है — 'वर्षा-बहार सब के, मन को लुभा रही है।'
कोई भी पंक्ति दुख, भय या क्रोध का संकेत नहीं देती।
अतः सही उत्तर है: (ख) आनंद और प्रसन्नता।

उत्तर: (ख) आनंद और प्रसन्नता

प्रश्न 2

"नभ में छटा अनूठी" और "घनघोर छा रही है" पंक्तियों का उपयोग वर्षा ऋतु के किस दृश्य को व्यक्त करने के लिए किया गया है? (क) बादलों के घिरने का दृश्य (ख) बिजली के गिरने का दृश्य (ग) ठंडी हवा के बहने का दृश्य (घ) आमोद छा जाने का दृश्य

हल

पंक्ति है — 'नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है।'
'नभ' अर्थात् आकाश, 'छटा अनूठी' अर्थात् अनोखी छटा, 'घनघोर' अर्थात् घने-गहरे बादल।
ये दोनों शब्द आकाश में घने काले बादलों के छा जाने का चित्र प्रस्तुत करते हैं।
अतः सही उत्तर है: (क) बादलों के घिरने का दृश्य।

उत्तर: (क) बादलों के घिरने का दृश्य

प्रश्न 3

कविता में वर्षा को 'अनोखी बहार' कहा गया है क्योंकि— (क) कवि वर्षा को विशेष ऋतु मानता है। (ख) वर्षा में सभी जीव-जंतु सक्रिय हो जाते हैं। (ग) वर्षा सबके लिए सुख और संतोष लाती है। (घ) वर्षा एक अद्भुत अनोखी प्राकृतिक घटना है।

हल

कविता में वर्षा आने पर मालिनें गाती हैं, मोर नाचते हैं, मेंढक गीत गाते हैं, पपीहे गर्मी से मुक्त होते हैं, किसान मनहर गीत लेते हैं, गुलाब खिलता है — सभी के लिए सुख और आनंद है।

अंतिम पंक्ति कहती है — 'सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर।' अर्थात् पूरी दुनिया की शोभा वर्षा पर निर्भर है।

इसलिए वर्षा सबके लिए — मनुष्य, पशु, पक्षी, वनस्पति — सुख और संतोष लाती है। यही उसकी 'अनोखी बहार' है।

अतः सबसे उपयुक्त उत्तर है: (ग) वर्षा सबके लिए सुख और संतोष लाती है।

उत्तर: (ग) वर्षा सबके लिए सुख और संतोष लाती है।

प्रश्न 4

"सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर" — इस पंक्ति का क्या अर्थ है? (क) प्रकृति में सभी जीव-जंतु एक-दूसरे पर निर्भर हैं। (ख) वर्षा पृथ्वी पर हरियाली और जीवन का मुख्य स्रोत है। (ग) बादलों की सुंदरता से ही पृथ्वी की शोभा बढ़ती है। (घ) हमें वर्षा ऋतु से जगत की भलाई की प्रेरणा लेनी चाहिए।

हल

पंक्ति का शाब्दिक अर्थ है — 'सारे संसार की सुंदरता/शोभा वर्षा पर निर्भर है।'

वर्षा के बिना न हरियाली, न नदियाँ, न फसल, न जीव-जंतुओं का पोषण — अर्थात् पूरी पृथ्वी की शोभा, सुंदरता और जीवन वर्षा के जल पर टिका है।

अतः सबसे सटीक अर्थ है: (ख) वर्षा पृथ्वी पर हरियाली और जीवन का मुख्य स्रोत है।

उत्तर: (ख) वर्षा पृथ्वी पर हरियाली और जीवन का मुख्य स्रोत है।

प्रश्नावली 7.2 — मिलकर करें मिलान (भावार्थ मिलान)

प्रश्न 1

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे स्तंभ 1 में दी गई हैं, उनके भावार्थ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। स्तंभ 1 की पंक्तियों का स्तंभ 2 की उपयुक्त पंक्तियों से मिलान कीजिए— स्तंभ 1: 1. पानी बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं 2. चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब 3. तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते 4. फिरते लखो पपीहे, हैं ग्रीष्म ताप खोते 5. खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है 6. चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर स्तंभ 2: 1. वर्षा ऋतु में तालाबों के जीव-जंतु अति प्रसन्न हैं। 2. वर्षा हो रही है और झरने बह रहे हैं। 3. वर्षा आने पर लाखों पपीहे गर्मी से राहत पाते हैं। 4. हंसों की कतारें प्रकृति की सुंदरता और अनुशासन को दर्शाती हैं। 5. वर्षा में खिले हुए फूल जैसे गुलाब प्रकृति में सुगंध और ताजगी फैला रहे हैं। 6. ठंडी हवाओं के कारण पेड़ों की सभी शाखाएँ हिल रही हैं।

हल

स्तंभ 1 — 1 (पानी बरस रहा है...) → स्तंभ 2 — 2 (वर्षा हो रही है और झरने बह रहे हैं।) : पंक्ति में वर्षा और बहते झरनों का वर्णन है।

स्तंभ 1 — 2 (चलती हवा है ठंडी...) → स्तंभ 2 — 6 (ठंडी हवाओं के कारण पेड़ों की सभी शाखाएँ हिल रही हैं।) : 'ठंडी हवा' से 'डालियाँ हिलना' → शाखाओं का हिलना।

स्तंभ 1 — 3 (तालों में जीव जलचर...) → स्तंभ 2 — 1 (वर्षा ऋतु में तालाबों के जीव-जंतु अति प्रसन्न हैं।) : तालों के जलचर प्राणी प्रसन्न हैं।

स्तंभ 1 — 4 (फिरते लखो पपीहे...) → स्तंभ 2 — 3 (वर्षा आने पर लाखों पपीहे गर्मी से राहत पाते हैं।) : 'ग्रीष्म ताप खोते' = गर्मी से राहत।

स्तंभ 1 — 5 (खिलता गुलाब कैसा...) → स्तंभ 2 — 5 (वर्षा में खिले हुए फूल जैसे गुलाब प्रकृति में सुगंध और ताजगी फैला रहे हैं।) : 'सौरभ उड़ा रहा है' = सुगंध फैलना।

स्तंभ 1 — 6 (चलते हैं हंस कहीं पर...) → स्तंभ 2 — 4 (हंसों की कतारें प्रकृति की सुंदरता और अनुशासन को दर्शाती हैं।) : 'बाँधे कतार सुंदर' = व्यवस्थित कतारें।

उत्तर: 1→2, 2→6, 3→1, 4→3, 5→5, 6→4

प्रश्नावली 7.3 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

कविता में कौन-कौन गीत गा रहे हैं और क्यों?

हल

कविता में तीन प्राणी/वर्ग गीत गाते हैं —

1. मालिनें (बाग-बगीचों की माली-महिलाएँ) — 'बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।' वे वर्षा की खुशी में, बागों में हरियाली और फूल खिलते देख आनंद से गाती हैं।
2. मेंढक — 'मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।' वर्षा ऋतु मेंढकों का प्रिय मौसम है; जल मिलने से वे टर्र-टर्र की ध्वनि करते हैं जिसे कवि ने 'सुगीत' कहा है।
3. किसान — 'गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।' वर्षा आने पर किसान खेतों में बुवाई/काम करते हुए मनोहर गीत गाते हैं क्योंकि वर्षा उनकी फसल के लिए जीवनदायिनी है।

उत्तर: मालिनें (खुशी और हरियाली से), मेंढक (वर्षा के आगमन से प्रसन्न होकर), और किसान (खेती की प्रसन्नता में) — तीनों वर्षा के आनंद में गीत गाते हैं।

प्रश्न 2

"बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं" — "तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते" — दी गई दोनों पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए। इनमें वर्षा के दो अलग-अलग दृश्य दर्शाए गए हैं। इन दोनों में क्या कोई अंतर है? क्या कोई संबंध है? अपने विचार लिखिए।

हल

अंतर —

पहली पंक्ति ('बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं') आकाश का दृश्य है — तूफानी और भयावह प्रतीत होने वाला, वर्षा का हिंसक/शक्तिशाली रूप।

दूसरी पंक्ति ('तालों में जीव जलचर, अति हैं प्रसन्न होते') धरती का दृश्य है — शांत तालाबों में प्राणियों का उल्लास, वर्षा का कोमल/आनंददायक प्रभाव।

संबंध —

दोनों में कारण-प्रभाव का संबंध है। बिजली-बादल वर्षा का कारण हैं और तालाबों में भरा जल (जिससे जलचर प्रसन्न हैं) उसका परिणाम है।

वर्षा बाहर से उग्र दिखती है (गरज-चमक) पर भीतर से जीवनदायिनी है (जलचरों को सुख देती है)।

उत्तर: अंतर: पहली पंक्ति वर्षा का उग्र आकाशीय दृश्य है, दूसरी शांत भूमि-जल का आनंद। संबंध: बिजली-बादल से वर्षा होती है, उसी से तालाब भरते हैं और जलचर प्रसन्न होते हैं — कारण और परिणाम का संबंध।

प्रश्न 3

कविता में मुख्य रूप से कौन-सी बात कही गई है? उसे पहचानिए, समझिए और अपने शब्दों में लिखिए।

हल

कविता का केंद्रीय भाव है — वर्षा ऋतु का प्राकृतिक सौंदर्य और उसका सृष्टि पर सार्वभौमिक आनंददायक प्रभाव।
कवि मुकुटधर पांडेय ने दिखाया है कि वर्षा आने पर प्रकृति के हर अंग में जीवन, उत्साह और सौंदर्य जाग उठता है — आकाश में घने बादल और बिजली, धरती पर हिलती डालियाँ और खिले फूल, तालों में प्रसन्न जलचर, मोर का नृत्य, मेंढक का संगीत, किसान के गीत।
अंतिम पंक्ति 'सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर' यही संदेश देती है कि पूरी दुनिया की समृद्धि और सुंदरता वर्षा पर टिकी है।
सार: वर्षा ऋतु सब प्राणियों के लिए — चाहे मनुष्य हो, पशु हो, पक्षी हो या पेड़-पौधे — आनंद और जीवन का स्रोत है।

उत्तर: कविता में मुख्य बात यह कही गई है कि वर्षा ऋतु प्रकृति के हर प्राणी और वनस्पति को आनंद और नई ऊर्जा देती है, और पूरे जगत की शोभा वर्षा पर ही निर्भर है।

प्रश्न 4

"खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है" — इस पंक्ति को पढ़कर एक खिलते हुए गुलाब का सुंदर चित्र मस्तिष्क में बन जाता है। इस पंक्ति का उद्देश्य केवल गुलाब की सुंदरता को बताना है या इसका कोई अन्य अर्थ भी हो सकता है?

हल

इस पंक्ति का एक अर्थ है — वर्षा आने पर गुलाब के फूल खिलते हैं और बागों में सुगंध फैलती है।
किंतु इसका गहरा अर्थ भी है — जिस प्रकार गुलाब वर्षा पाकर खिलता है और अपनी सुगंध (सौरभ) चारों ओर बिखेरता है, उसी प्रकार वर्षा के आने पर पूरी सृष्टि में आनंद और सौंदर्य खिल उठता है।
यह पंक्ति यह भी बताती है कि वर्षा ऋतु बागों को सुगंधमय और उल्लासपूर्ण बना देती है — केवल गुलाब नहीं, समस्त प्रकृति 'खिल' उठती है।
इस प्रकार गुलाब का खिलना वर्षा में प्रकृति के समग्र आनंद का प्रतीक है।

उत्तर: इस पंक्ति का उद्देश्य केवल गुलाब की सुंदरता बताना नहीं है; यह वर्षा ऋतु में समस्त प्रकृति के खिलने और आनंदित होने का प्रतीक भी है।

प्रश्न 5

कविता में से उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए जिनमें सकारात्मक गतिविधियों का उल्लेख किया गया है, जैसे— 'गीत गाना', 'नृत्य करना' और 'सुगंध फैलाना'। इन गतिविधियों के आधार पर बताइए कि इस कविता का शीर्षक 'वर्षा-बहार' क्यों रखा गया है?

हल

सकारात्मक गतिविधियों वाली पंक्तियाँ —
गीत गाना: 'बागों में गीत सुंदर, गाती हैं मालिनें अब।' / 'मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे।' / 'गाते हैं गीत कैसे, लेते किसान मनहर।'
नृत्य करना: 'करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे।'
सुगंध फैलाना: 'खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है।'

अन्य सकारात्मक गतिविधियाँ: जलचरों का प्रसन्न होना, पपीहों का ग्रीष्म-ताप खोना, हंसों का सुंदर कतारों में चलना।

शीर्षक 'वर्षा-बहार' क्यों: 'बहार' का अर्थ है वसंत जैसा उत्सव और आनंद का समय। इस कविता में वर्षा ऋतु एक उत्सव की तरह आती है — मोर नाचते हैं, मेंढक गाते हैं, फूल खिलते हैं, किसान गीत गाते हैं। इसीलिए कवि ने वर्षा को 'बहार' कहा — यानी वर्षा में प्रकृति वसंत की तरह आनंदमय हो जाती है।

उत्तर: गीत गाना, नृत्य करना, सुगंध फैलाना आदि सकारात्मक गतिविधियाँ दर्शाती हैं कि वर्षा ऋतु में प्रकृति उत्सव मनाती है — इसीलिए कविता का शीर्षक 'वर्षा-बहार' है।

प्रश्नावली 7.4 — कविता का सौंदर्य (पर्यायवाची शब्द-चयन)

प्रश्न 1

नीचे कविता की कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। इनमें कुछ शब्द हटा दिए गए हैं और साथ में मिलते-जुलते अर्थ वाले शब्द भी दिए गए हैं। इनमें से प्रत्येक शब्द से वह पंक्ति पूरी करके देखिए। जो शब्द उस पंक्ति में जँच रहे हैं उन पर घेरा बनाइए। पंक्ति 1: _____ बहार सब के, मन को लुभा रही है विकल्प: (बारिश, बरसात, बरखा, वृष्टि) पंक्ति 2: _____ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है विकल्प: (आकाश, गगन, अंबर, व्योम) पंक्ति 3: बिजली चमक रही है, _____ गरज रहे हैं विकल्प: (मेघ, जलधर, घन, जलद) पंक्ति 4: _____ बरस रहा है, झरने भी ये बहे हैं विकल्प: (जल, नीर, सलिल, तोय)

हल

पंक्ति 1 — मूल शब्द 'वर्षा' की जगह विकल्प: बारिश (उर्दू-हिंदी), बरसात (साधारण), बरखा (काव्यात्मक, तत्सम-व्युत्पन्न), वृष्टि (संस्कृत तत्सम)।

'बरखा' और 'बरसात' कविता के सुर में सबसे अधिक जँचते हैं क्योंकि 'बरखा-बहार' एक काव्यात्मक जोड़ी है और पंक्ति की लय बनाए रखते हैं।

पंक्ति 2 — मूल शब्द 'नभ' की जगह विकल्प: आकाश, गगन, अंबर, व्योम — सभी आकाश के पर्यायवाची हैं।

'गगन' और 'अंबर' कविता की लय में सबसे सुंदर लगते हैं क्योंकि ये एकाक्षरी हैं और 'नभ' जितने ही संक्षिप्त हैं।

पंक्ति 3 — मूल शब्द 'बादल' की जगह: मेघ, जलधर, घन, जलद — सभी बादल के पर्यायवाची।

'मेघ' और 'घन' पंक्ति में सबसे अधिक जँचते हैं — 'मेघ गरज रहे हैं' और 'घन गरज रहे हैं' — दोनों काव्यात्मक रूप से उचित हैं।

पंक्ति 4 — मूल शब्द 'पानी' की जगह: जल, नीर, सलिल, तोय — सभी पानी के पर्यायवाची।

'जल' सबसे सरल और 'नीर' काव्य-भाषा में अत्यंत प्रचलित है — दोनों पंक्ति में जँचते हैं।

उत्तर: पंक्ति 1: बरखा/बरसात; पंक्ति 2: गगन/अंबर; पंक्ति 3: मेघ/घन; पंक्ति 4: जल/नीर — ये विकल्प कविता की लय और भाव में सबसे अच्छे जँचते हैं।

प्रश्नावली 7.5 — विशेषण (विशेषण-विशेष्य पहचान)

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों में विशेषण और विशेष्य शब्दों की पहचान करके लिखिए— उदाहरण: नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है → विशेषण: अनूठी, विशेष्य: छटा 1. चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर 2. मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे 3. चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब

हल

उदाहरण (दिया हुआ): 'नभ में छटा अनूठी, घनघोर छा रही है' — विशेषण: अनूठी, विशेष्य: छटा

1. 'चलते हैं हंस कहीं पर, बाँधे कतार सुंदर' — विशेषण: सुंदर, विशेष्य: कतार ('सुंदर कतार' — कतार की विशेषता बताई गई है।)
2. 'मेंढक लुभा रहे हैं, गाकर सुगीत प्यारे' — विशेषण: प्यारे (या सु+गीत में 'सु' उपसर्ग), विशेष्य: सुगीत ('प्यारे सुगीत' — सुगीत की विशेषता।)
3. 'चलती हवा है ठंडी, हिलती हैं डालियाँ सब' — विशेषण: ठंडी, विशेष्य: हवा ('ठंडी हवा' — हवा की विशेषता।)

उत्तर: 1. विशेषण: सुंदर — विशेष्य: कतार; 2. विशेषण: प्यारे — विशेष्य: सुगीत; 3. विशेषण: ठंडी — विशेष्य: हवा

प्रश्नावली 7.6 — ऋतु और शब्द (शब्द-वर्गीकरण)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए शब्दों को पढ़कर बताइए कि कौन-सी ऋतु का स्मरण होता है। इन शब्दों को तालिका में उपयुक्त स्थान पर लिखिए— शब्द-सूची: धूप, लू, बयार, हिमपात, वृष्टि, पाला, ताप, जाड़ा, झड़ी, ठिठुरन, धुंध, कोहरा, आँधी, उमस, हरियाली, बहार, तपन, जेठ, सावन, रिमझिम, शीतलता, ओस, ठंडक, बादल फटना, कड़ाके की ठंड तालिका: - वसंत ऋतु (सामान्यतः मार्च–अप्रैल) - ग्रीष्म ऋतु (सामान्यतः मई–जून) - वर्षा ऋतु (सामान्यतः जुलाई–अगस्त) - शरद ऋतु (सामान्यतः सितंबर–अक्तूबर) - हेमंत ऋतु (सामान्यतः नवंबर–दिसंबर) - शिशिर ऋतु (सामान्यतः जनवरी–फरवरी)

हल

वसंत ऋतु (मार्च–अप्रैल): बहार, बयार, हरियाली — वसंत में हरियाली छाती है, ठंडी-मीठी बयार चलती है, चारों ओर बहार होती है।

ग्रीष्म ऋतु (मई–जून): धूप, लू, ताप, तपन, आँधी, उमस, जेठ — गर्मी की लू, ताप, उमस और जेठ मास ग्रीष्म की पहचान हैं।

वर्षा ऋतु (जुलाई–अगस्त): वृष्टि, झड़ी, रिमझिम, सावन, बादल फटना — वर्षा में बारिश, झड़ी और सावन का मौसम होता है।

शरद ऋतु (सितंबर–अक्तूबर): शीतलता, ओस — शरद में हल्की ठंडक और ओस पड़ती है।

हेमंत ऋतु (नवंबर–दिसंबर): जाड़ा, धुंध, ठंडक — हेमंत में जाड़ा और धुंध शुरू होती है।

शिशिर ऋतु (जनवरी–फरवरी): हिमपात, पाला, ठिठुरन, कोहरा, कड़ाके की ठंड — शिशिर में पाला, ठिठुरन और कड़ाके की ठंड होती है।

उत्तर: वसंत: बहार, बयार, हरियाली। ग्रीष्म: धूप, लू, ताप, तपन, आँधी, उमस, जेठ। वर्षा: वृष्टि, झड़ी, रिमझिम, सावन, बादल फटना। शरद: शीतलता, ओस। हेमंत: जाड़ा, धुंध, ठंडक। शिशिर: हिमपात, पाला, ठिठुरन, कोहरा, कड़ाके की ठंड।